ॐ Date

गुरुवार

29/1/2009

सुखी परिवार

सभी परमात्माओं को मेरा नमस्कार - - -

इस "श्रीशक्ती अनुष्ठान" के पावन अवसर पर आप जिस एकाग्रता से और समर्पण भाव से ध्यान कर रही है, वह सब देख कर मैं अती प्रसन्न हुँ। आपके इस भाव के कारन ही मैं यह सब लिख पा रहा हुँ। आपका भाव ही गुरुशक्तियो से लिखवा रहा है। मैं तो माध्यम मात्र हुँ।

आप मे से कुछ के मन मे प्रश्न भी उठ रहा है, की हम एक पारीवारीक स्त्रीया है। सारे परिवार की जबाबदारी हम पर है, और स्वामीजी केवल हमारे ही बारे मे ही क्यो लिख रहे है। हम परिवार से अलग थोडे ही है, हम अकेले क्या कर सकते है, लेकीन मैं जान रहा हुँ, की जो आप कर सकते है, वह आपके परिवार का कोई भी सदस्य नही कर सकता क्योकी आप प्रत्येक सदस्य के साथ जुडी हुई है। इसी लीये एक सकारात्मक ऊर्जा अगर सारे परिवार मे प्रसारीत करना हो तो आप ही सर्वोत्तम माध्यम हो सकती हो। और आप सुखी तब होगी जब सारा परिवार सुखी होगा इस लीये मैं केवल और केवल आप ही के बारे मे सोच रहा हुँ, आप और परिवार मे अलग करके नही देखता हुँ। अब आपको लगता तो पुरुष साधकों ने इन दिनो मे क्या करना चाहिये तो उन्होने तुम्हारे सारे कार्य अनुष्ठान के समय संभाल लेने चाहिये और तुम्हे ध्यान करने के लीये मुक्त कर देना चाहिये कहते है। न की अच्छा कार्य करना और अच्छे कार्य मे मदत करना दोनो ही समान होता है।

और पुरूष साधको तुम्हारा ध्यान रखना चाहीये की तुम्हारे ध्यान मे कोई अडचन न हो. और कीसी भी कारण से तुम्हारा चित्त दुषीत न हो बात बे ये भी करे तो सब पा जायेगे।
एक स्त्री समय आने पर पुरूष बन सकती है। पर एक पुरूष समय आने पर एक स्त्री नही बन सकता है। क्योकी स्त्री को आत्मग्लानी पर नियंत्रण करना पडता है। और पुरूष को अपने पुरूष होने के अंहकार पर नियंत्रण करना होता है आत्मग्लानी से बाहर आना आसान है। अंहकार से बाहर आना कठीण है पुरूष की अंहकार की सबसे बडी समस्या है। इसलीये वह समर्पीत नही हो पाता है। और समर्पण मे ध्यान सिखने के लिये और ध्यान करने के लिये समर्पण अती आवश्यक है। हम प्रत्येक आधे नकारात्मक है आधे सकारात्मक है, तो हम चाहे तो भी नकारात्मक विचारो पर नकारात्मक शक्तीयो पर नियंत्रण नही कर सकते नियंत्रण कर सकते है। तो केवल सकारात्मक शक्तीयो की सामुहीकता के जुडना ही समर्पण है। सामुहीकता क जुडने से कार्य तो खुद ब खुद हो जाता है मै स्वयम चिन की सिमा के पास एक स्त्रीयो के आश्रम मे कई दिन रहा हुं, जहा नमक और तेल छोडकर वे सब चिजे अपनी ही स्वयम बनाती थी और बडे अच्छे तरीके से सुव्यवस्थीत ढंग से आश्रम का संचालन होता था, आप मे अपार क्षमता है। केवल इन क्षमता का ध्यान आपको नही है। आप जैसे ही सामुहीकता के साथ जुड जायेगी तो आपके भितर छुपी हुई आपकी खुबीया स्वयम ही बाहर आ जायेगी, इस आपको भी फायदा होगा और आपके परिवार का भी फायदा होगा,

और संगोपन व वितरण आपका स्वभाव है, तो आप सकारात्मक शक्तीया सारे परीवार मे बांटेगी ही और आने वाले समय मे यह सकारात्मक शक्तीयो की सामुहीकता आपके जिवन मे बडे काम आयेगी,

सपुर्ण परिवार एक स्त्री पर टिका होता है, अगर स्त्री संतुलीत है, तो ही परिवार संतुलीत रह सकता है मैंने स्त्री संतुलीत है, इस लीये परिवार संतुलीत है, ऐसा देखा है, पर किसी परिवार मे स्त्री संतुलीत नही है, तो भी परिवार संतुलीत ऐसा कभी नही देखा है, मैं भी जिवन मे कई बार असंतुलीत हुआ हुं, तब "गुरु माँ" पत्नी व माँ का दोहरी भुमीका निभाकर मुझे संतुलीत रखा है तो वही संतुलन आप भी आपके जिवन मे स्थापीत करे, और वह संतुलन से आप का परिवार संतुलीत हो यही प्रभु से प्रार्थना है, और मेरे इच्छा करने से नही होगा आपको "स्त्री शक्ती" की सामुहीक शक्ती बनानी होगी, यह अनुष्ठान का समापन - स्त्री शक्ती के जिवन मे नया सवेरा होगा यह मेरा पुर्ण विश्वास है आप सभी को खुब खुब आशिर्वाद - - -

आपका
बाबा स्वामी
29/1/2009